भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 19.02.2019

बनारस के भूगर्भ जल का दायरा तेजी से सिमट रहा, आईआईटी बीएचयू में 14 दिवसीय कार्यशाला

गंगा बेसिन पर आश्रित है 44 करोड़ लोगों का जीवन

काशी कथा

वाराणसी | निज संवाददाता

गंगा को जीवनदायिनी यूं ही नहीं कहा जाता। इसके किनारे करीब 44 करोड़ लोगों का जीवन आश्रित है। खासकर काशी में रहने, बाबा विश्वनाथ का पूजन, गंगा जल का आचमन और संत समागम का सुख अद्भुत है। काशी की भूगर्भीय संरचना भी ऐसी है कि वो गंगा को अपने पास रखती है।आईआईटी बीएचयू के पूर्व निदेशक प्रो. सिद्धनाथ उपाध्याय ने काशीकथा की ओर से आयोजित 14 दिनी कार्यशाला के दौरान सोमवार को यह जानकारी दी।

आईआईटी बीएचयू में आयोजित काशीकथा में विचार रखते प्रो. एसएन उपाध्याय।

उन्होंने कहा कि गंगा पूरे भारते को आपस मे जोड़ने की सांस्कृतिक कड़ी है। बढ़ते नगरीकरण, औद्योगीकरण, अशिक्षा का दुष्प्रभाव काशी की प्राचीनता पर भी पड़ा है। प्रो. उपाध्याय ने कहा कि 19 वीं शताब्दी तक बनारस में तालाबों की एक लंबी श्रृंखला थी। लेकिन अब बनारस के भूगर्भ जल का क्षेत्र कम हो रहा है। इसे बचाना होगा। बनारस में अंग्रेज़ी शासन में बने गॉथिक शैली की जल संरक्षण वाली इमारतों व भदैनी पम्पिंग स्टेशन तथा भेलूपुर स्थित पानी टंकी को भी पुरातात्विक महत्व देना चाहिए। रामनगर की रामलीला पर अरविन्द मिश्र तथा बलराम यादव ने विचार रखे। अजय रतन बनर्जी ने बनारस की अन्य ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व को छायाचित्र के जरिए प्रस्तुत किया।